B.A-I (Hons)
Paper - I
Unit - I

Topic - Clinical or Case study Method

(III)

नैदानिक या केस अध्ययन विधि

केस अध्ययन विधि मनोविज्ञान की एक प्रमुख विधि है। इसे मनोवैज्ञानिकों ने चिकित्साशास्त्र से ग्रहण किया है। इस विधि का उपयोग नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यक्तियों के रोगात्मक लक्षणों की पहचान करने तथा उसके कारणों को पता लगाने में काफी किया जाता है। यही कारण है इसे नैदानिक विधि भी कहा जाता है।

इस विधि में मनोवैज्ञानिक किसी एक व्यक्ति के व्यवहार को समझने के लिए उसके जीवन के सभी तरह की घटनाओं जो उसके साथ माँ के गर्भ में आने के समय से ही घटित हो रहा होता है।

केस विवरण तैयार करते समय मनोवैज्ञानिक निम्नांकित तथ्यों पर अधिक ध्यान देते हैं —

(i) प्रारम्भिक सूचनाएँ (Preliminary information) - इसके अन्तर्गत व्यक्ति के नाम, उम्र, यौन, माता-पिता का उम्र, शिक्षा, पेशा, सामाजिक स्तर, परिवार में सदस्यों की संख्या आदि जैसे तथ्यों को सम्मिलित किया जाता है।

(ii) गत इतिहास (Past history) - इसके अन्तर्गत गर्भधारण से वर्तमान समय तक का इतिहास तैयार किया जाता है। जब व्यक्ति माँ के गर्भ में होता है, तो उस समय माँ की स्थिति कैसी थी, माँ में उस समय कोई भयंकर शारीरिक या मानसिक बीमारी हुई थी या नहीं, जन्म लेते समय की अवस्था कैसी थी, क्या जन्म सामान्य ढंग से हुआ था या नहीं, किसी प्रकार की शारीरिक आघात आदि की घटना हुई थी या नहीं, से संबंधित तथ्य इकट्ठा किये जाते हैं। इसके अलावा बालक का जन्मक्रम, बचपनावस्था में किसी भयंकर शारीरिक बीमारी या प्रभाव आदि से संबंधित तथ्यों को इकट्ठा किया जाता है।

(iii) वर्तमान अवस्था (Present Condition) - केस विवरण तैयार करने में व्यक्ति के वर्तमान अवस्था के बारे में भी एक लेखा-जोखा तैयार कर लिया जाता है। जैसे - बालक की बुद्धि स्तर, उसकी रुचि, शौक, अभिक्षमता, सांवेगिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि के बारे में तथ्य इकट्ठा किया जाता है।

To be Continued